इकाई 3 संपादकीय पृष्ठ के लिए लेखन

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 संपादकीय पृष्ठ का महत्व

1.3 संपादकीय पृष्ठ की प्रकृति

3.3.1 संपादकीय टिप्पणी या अग्रलेख

3.3.2 संपादकीय पृष्ठ के लेख

3.3.3 नियमित स्तंभ

3.3.4 साक्षात्कार

3.3.5 पुस्तक समीक्षा, प्रतिक्रियाएं आदि

3.3.6 समाचार विश्लेषण

3.3.7 पाठकों के पत्र

1.4 संपादकीय टीम की जिम्मेदारियां

1.5 संपादकीय और फीचर पृष्ठ के लेखों में अंतर

1.6 संपादकीय पृष्ठ के लिए लेखन

1.7 सारांश

1.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

यह समाचार पत्र और फीचर लेखन के पहले खंड की तीसरी इकाई है। इसका उद्देश्य आपको पृष्ठ से परिचित कराना है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- संपादकीय पृष्ठ का महत्व बता सकेंगी/सकेंगे;
- संपादकीय लेखन का उद्देश्य स्पष्ट कर सकेंगी/सकेंगे;
- संपादकीय पृष्ठ के लेखों की प्रकृति को समझा सकेंगी/सकेंगे;
- संपादकीय टीम की जिम्मेदारियों का उल्लेख कर सकेंगी/सकेंगे;
- संपादकीय और फीचर पृष्ठ के लेखों में अंतर स्पष्ट कर सकेंगी/सकेंगे;
- संपादकीय पृष्ठ के लिए विषयों के चुनाव और उनकी प्रस्तुति को समझ सकेंगी/सकेंगे और
- पाठकों के पत्रों की भूमिका के बारे में जान सकेंगी/सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

संपादकीय पृष्ठ का जिक्र आते ही अखबारों के उस पृष्ठ का बोध होता है जिस पर संपादक की टिप्पणियां, ताजा घटनाओं पर विश्लेषणपरक लेख, नियमित स्तंभ और

पाठकों की प्रतिक्रियाएं छपती हैं। हालांकि साप्ताहिक–पाक्षिक और मासिक समाचार पत्रिकाओं में भी संपादकीय की जगह निर्धारित होती है, लेकिन उनका प्रभाव अखबारों के संपादकीय पृष्ठ से कम देखा जाता है। जैसा कि आप जानते हैं अखबारों के दो पक्ष होते हैं–एक समाचार और दूसरा विचार। संपादकीय पृष्ठ विचार पक्ष ही है। टेलीविजन या रेडियो के समाचार चैनलों में मुख्य रूप से समाचारों की प्रस्तुति और उनके विश्लेषण पर जोर होता है। वहां विचार पक्ष की गुंजाइश अधिक नहीं होती। होती भी है तो बहुत कम और वह बातचीत, बहस या विशेषज्ञों की राय तक सीमित होती है। अखबारों में इसकी भरपूर जगह होती है।

सूचनाएं भर पा लेने से पाठक या दर्शक की जिज्ञासा शांत नहीं होती। उसमें एक वैचारिक जिज्ञासा लगातार बनी रहती है। यही वजह है कि तमाम समाचार बाजार में आ जाने के बावजूद अखबारों की मांग पर कोई असर नहीं पड़ा है। हालांकि अखबारों के फीचर पृष्ठों पर भी विचार की गुंजाइश काफी होती है, मगर संपादकीय पृष्ठ का महत्व उन पृष्ठों से अधिक क्यों होता है, उसकी प्रकृति भिन्न क्यों होती है–इन सब बातों की चर्चा हम इस पाठ में करेंगे और जानेंगे कि संपादकीय पृष्ठ के लिए विषयों का चयन करते और सामग्री जुटाते समय किस तरह की सावधानिया बरतने की जरूरत है।

3.2 संपादकीय पृष्ठ का महत्व

अखबारों में बड़ा हिस्सा समाचारों का होता है। समाज के विभिन्न हिस्सों में हुई महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में सूचनाएं उपलब्ध कराना इनका मुख्य मकसद है। मगर जैसा कि हम आपसे पहले भी बात कर चुके हैं, समाचारों को पढ़ लेने भर से पाठक को संतोष नहीं मिलता। समाचारों को पढ़ने के बाद उसके मन में तरह–तरह की प्रतिक्रियाएं पैदा होती हैं। कोई न कोई विचार उपजता है। वह विचार 'पक्ष' में भी हो सकता है और 'विपक्ष' में भी। दोनों के अपने तर्क होते हैं। आपके मन में भी समाचारों को पढ़ने के बाद विचार पैदा होते होंगे, प्रतिक्रिया होती होगी।

मसलन, दिल्ली उच्च न्यायालय के उस फैसले को याद करें जिसमें गैरकानूनी भवन निर्माण के खिलाफ नगर निगम को तोड़फोड़ अभियान चलाना पड़ा। उच्च न्यायालय के उस फैसले पर दोनों तरह की प्रतिक्रिया देखी गईं। कुछ लोगों में फैसले को लेकर नाराजगी दिखी तो काफी लोगों ने इसकी प्रशंसा की। आपकी क्या प्रतिक्रिया थी? जब आपने यह खबर पढ़ी होगी तो निश्चित रूप से आपके भीतर भी विचारों का एक सिलसिला शुरू हुआ होगा। ऐसी घटनाएं, फैसले हर रोज खबरों का हिस्सा होते हैं। जिन्हें पढ़ने के बाद आप उन पर प्रतिक्रिया देने को उत्सुक होते हैं। चाहे वह सरकार बदलने की घटना हो, या कहीं बाढ़, भूकंप या ट्रेन दुर्घटना की खबर हो। यातायात सुविधा में गड़बड़ी, बिजली–पानी की आपूर्ति ठीक से न हो पाना, मुहल्ले में साफ सफाई पर नगर निगम के कर्मचारियों की लापरवाही जैसे अनेक विषय रोज आपके सामने आते हैं। इसी तरह सरकार के फैसले हैं– इनमें रसोई गैस, पेट्रोल आदि की कीमतें बढ़ाने का फैसला हो या रेलों में विद्यार्थियों के लिए टिकट दरों में कमी – सब पर आपके मन में विचार आते होंगे। कई बार आप उन विचारों को लिख कर संतुष्ट होते हैं तो कई बार उनसे मिलते–जुलते विचारों को पढ़कर। यह सबके लिए संभव नहीं है कि हर घटना पर अपने विचार लिखें। अखबार पढ़ने वालों में काफी तादाद । ऐसे लोगों की होती है जो अखबारों में छपे लेखों या संपादकीय

टिप्पणियों को पढ़कर अपने विचारों की पुष्टि का अनुभव करते हैं।

अखबारों के संपादकीय पृष्ठ पर हर दिन महत्वपूर्ण घटनाओं या फैसलों पर संपादक की टिप्पणियां होती हैं। इसके अलावा छोटे–बड़े कुछ लेख होते हैं, पाठकों के पत्र होते हैं, जिनके जरिए विभिन्न समस्याओं पर विचार प्रकट किए जा सकते हैं। समाचारों में सूचनाएं दी जाती हैं या किसी घटना या फैसले की विस्तार से जानकारी दी जाती है, इसलिए उनमें संवाददाता को अपने विचार रखने की गुंजाइश कम होती है। लेकिन संपादकीय पृष्ठों पर छपने वाले लेखों और टिप्पणियों में तार्किक और विश्लेषणात्मक ढंग से विचार व्यक्त किए जाते हैं इसलिए उनसे पाठक और शासन–सत्ता में जिम्मेदार पदों पर बैठे लोगों को भी एक दिशा मिलती है। जैसा कि आप जानते हैं, संचार माध्यम की जिम्मेदारी सिर्फ सूचनाएं देना नहीं बल्कि समस्याओं की तरफ शासन का ध्यान आकर्षित करना और लोगों में जागरूकता पैदा करना भी है इसलिए संपादकीय पृष्ठ की टिप्पणियां ज्यादा महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। कई बार संपादकीय टिप्पणियों के असर से अदालतों को उन समस्याओं का संज्ञान लेते और सरकार से जवाब तलब करते देखा गया है और सरकार को अपने फैसलों पर पुनर्विचार करने पर मजबूर होना पड़ा है। शायद आपको जानकर ताज्जुब होगा कि आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पर देश भर में जो सक्रियता दिखाई दे रही है वह अखबारों द्वारा उठाया हुआ मुद्दा है। भ्रष्टाचार, सार्वजनिक वितरण प्रणाली में बरती जाने वाली अनियमितताएं, ग्रामीण रोजगार योजना की स्थिति, पंचायतों की भूमिका या सड़क–बिजली–पानी से जुडी विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति जैसे अनेक मुद्दों पर अखबारों ने सरकार को विचार करने के लिए मजबूर किया है।

संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाली टिप्पणियां, लेख और स्तंभ आमतौर पर वरिष्ठ लोगों द्वारा लिखे होते हैं। इन्हें विशेषज्ञ लोग लिखते हैं इसलिए उनके विचारों को ज्यादा महत्वपूर्ण माना जाता है और इसीलिए इस पृष्ठ की रचनाओं का चयन करते वक्त ज्यादा सावधानी रखने की जरूरत होती है।

3.3 संपादकीय पृष्ठ की प्रकृति

हर अखबार में संपादकीय पृष्ठ निर्धारित होता है। आमतौर पर बीच का पन्ना और उसमें भी बाईं ओर का पन्ना, ताकि उस पर लोगों की नजर आसानी से चली जाये। हिन्दी अखबारों में इसके लिए प्रायः एक पृष्ठ निर्धारित होता है, लेकिन अंग्रेजी अखबारों में दो या इससे ज्यादा पृष्ठ संपादकीय सामग्री के लिए दिए जाते हैं। हालांकि इधर के कुछ वर्षों में अंग्रेजी में ऑप–ऐड (अपोजिट एडिट पेज) की तर्ज पर हिन्दी में भी संपादकीय पृष्ठ के सामने एक और संपादकीय पृष्ठ यानी 'सम्मुख संपादकीय पृष्ठ' रखने का प्रचलन शुरू हुआ है, मगर ज्यादातर अखबारों में इसके लिए एक ही पृष्ठ निर्धारित है।

संपादकीय पृष्ठ को मोटे तौर पर सात हिस्सों में बांट सकते हैं :

1) संपादकीय टिप्पणी या अग्रलेख

2) संपादकीय पृष्ठ के लेख

3) नियमित स्तंभ

4) साक्षात्कार

5) पुस्तक समीक्षा, प्रतिक्रियाएं आदि

6) समाचार विश्लेषण

7) पाठकों की प्रतिक्रियाएं

3.3.1 संपादकीय टिप्पणी या अग्रलेख

यह अखबारों के विचार पक्ष का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसे अग्रलेख भी कर जाता है। चूंकि संपादकों की बहुत सारी जिम्मेदारियां होती हैं इसलिए यह संभव नहीं होता कि वे रोज अग्रलेख लिख सकें। अतः इन्हें आमतौर पर उनकी ओर से सहायक संपादक लिखते हैं। इसलिए इन टिप्पणियों से अखबार के रुख और विभिन्न मसलों पर उसके विचारों का पता चलता है। हालांकि कई मुद्दों पर लगभग सभी अखबारों का रुख एक जैसा होता है, मगर ऐसे भी अनेक मुद्दे उभर कर आते हैं जिन पर सबकी अलग–अलग राय हो सकती है। जैसे, पाकिस्तान के साथ भारत के रिश्तों या आतंकवाद के मामले में लगभग सभी अखबारों की राय मिलती–जुलती होती है, मगर अमेरिका, फ्रांस, चीन, जापान आदि देशों के साथ राजनयिक या व्यापारिक समझौतों पर भिन्न–भिन्न हो सकती है। इसी तरह देश की राजनीतिक गतिविधियों या सरकार के फैसलों पर हर अखबार का रुख भिन्न हो सकता है।

संपादकीय टिप्पणी के लिए हर अखबार में स्थान निर्धारित होता है। इसके लिए आमतौर पर पृष्ठ का बायां हिस्सा ऊपर से नीचे तक रखा जाता है। कुछ अखबार सबसे ऊपर का हिस्सा इसके लिए रखते हैं। कुछ अखबारों में तीन अग्रलेख होते हैं, कुछ में दो और कुछ अखबारों में सिर्फ एक टिप्पणी प्रकाशित की जाती है। संपादकीय टिप्पणी के लिए विषय का चुनाव करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि देश या विदेश में हुई किसी ऐसी बड़ी घटना को लिया जाए जिसका व्यापक असर होता हो। पहली टिप्पणी के लिए प्रायः सरकार के किसी फैसले, नीतिगत मामले या राजनीतिक उथल–पुथल से संबंधित विषय चुना जाता है। अक्सर ऐसे भी मौके आते हैं। जब एक ही दिन इस तरह के कई विषय होते हैं। उनमें सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे को टिप्पणी के लिए चुना जाता है। दूसरे संपादकीय के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, खेल, अर्थ जगत, व्यापार, पर्यावरण या लोकरुचि की घटनाओं और मुद्दों को विषय बनाया जाता है। ऐसे अनेक विषय होने पर यह देखा जाता है कि किस घटना का दायरा अधिक व्यापक है। स्थानीय अखबारों में स्थानीय घटनाओं पर भी टिप्पणियां लिखी जा सकती हैं, मगर राष्ट्रीय स्तर के अखबारों में ऐसे विषय का चुनाव किया जाता है जिसका प्रभाव पूरे देश के लोगों पर किसी न किसी रूप में पड़ता हो। हालांकि अब हिन्दी के किसी भी अखबार में तीसरी टिप्पणी नहीं होती, मगर जिनमें होती है उनमें तीसरे के लिए विषय का चुनाव करते वक्त आमतौर पर हलके–फुलके विषय लिए जाते हैं। घटना भले ही देखने में मामूली लगती हो, मगर उसके बहाने समस्या और व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया जाता है। एक समय जब जनसत्ता में तीसरी संपादकीय टिप्पणी प्रकाशित होती थी तो वह काफी लोकप्रिय हुआ करती थी।

एक धारणा–सी बन गई है कि संपादकीय टिप्पणियों के पाठक कम होते हैं, मगर ऐसा नहीं है। न सिर्फ सत्ता और प्रशासन के जिम्मेदार पदों पर बैठे लोग इन टिप्पणियों पर नजर रखते हैं, बल्कि सामान्य पाठक भी रुचि के साथउन्हें पढ़ते हैं। चूंकि इन टिप्पणियों से अखबार की राय पता चलती है और उनके लिए सीधे–सीधे

संपादक जिम्मेदार होते हैं इसलिए इन्हें लिखते वक्त ज्यादा सावधानी बरती जाती है। तथ्यों में कोई चूक न होने पाए, भाषा शालीन हो, एक भी ऐसे शब्द का प्रयोग न हो जिससे किसी को ठेस पहुंचाने, नीचा दिखाने या उसके प्रति घृणा या अतिशय लगाव की मंशा जाहिर होती हो। संपादकीय टिप्पणी में निष्पक्षता बहुत जरूरी है। उसमें व्यक्त राय जनहित में होती है, इसलिए किसी सरकार या राजनीतिक दल का खुल्लमखुल्ला पक्ष नहीं लिया जाता। लेकिन इसका यह अर्थ भी नहीं लगाया जा सकता कि संपादकीय टिप्पणी हमेशा सरकार के खिलाफ ही होती है। अगर सरकार कोई सराहनीय फैसला किया है तो उसकी तारीफ भी की जाती है और उसकी कमियों की तरफ संकेत करके सुधारने की सलाह दी जाती है। उदाहरण के लिए, आप किसी एक ही विषय पर लिखे दो अखबारों की संपादकीय टिप्पणियों को पढ़ें और तुलना करें कि उनमें क्या समानता और अंतर है।

संपादकीय पृष्ठ की टिप्पणियों के अलावा कई बार विशेष संपादकीय भी लिखा जाता है। यह आमतौर पर अखबार के पहले पृष्ठ पर संपादक के नाम से प्रकाशित किया जाता है। अगर राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कोई बड़ी घटना होती है, जैसे सरकार बदलती है या बजट में कुछ विशेष प्रावधान किए जाते हैं या सामाजिक अस्थिरता पैदा करने वाली कोई चरमपंथी घटना हो जाती है जिससे कानून–व्यवस्था की लापरवाही या नाकामी जाहिर होती हो तो विशेष संपादकीय लिखा जाता है।

संपादकीय टिप्पणियों से खुद अखबार के दूसरे पृष्ठों पर काम करने वाले लोगों को भी दिशा मिलती है। इससे उन्हें वैचारिक रुख, भाषा संबंधी सावधानियों आदि का पता चलता है। समाचारों के चयन और उनकी प्रस्तुति में भी संपादकीय टिप्पणियों से काफी मदद मिलती है। संपादकीय टिप्पणियों में चूंकि संपादक के विचार होते हैं और उन्हें वह खुद या उसकी तरफ से अखबार के संपादकीय पृष्ठ पर काम करने वाले विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ और सहायक संपादक लिखते हैं, इसलिए बाहर से लिखने वालों को इसका अधिकार नहीं होता।

बोध प्रश्न 1

निम्नलिखित प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर दें।

1) संपादकीय पृष्ठ का महत्व दूसरे पृष्ठों से अधिक क्यों है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) संपादकीय पृष्ठ को विचार पक्ष का पृष्ठ क्यों कहा जाता है?

.....

.....

.....

.....

3) संपादकीय टिप्पणी या अग्रलेख का विशेष महत्व क्यों है?

.....

.....

.....

.....

.....

4) विशेष संपादकीय कब और क्यों लिखा जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.3.2 संपादकीय पृष्ठ के लेख

संपादकीय टिप्पणियों के अलावा संपादकीय पृष्ठ के लेख भी अखबार या पत्रिका के वैचारिक पक्ष का अहम हिस्सा होते हैं। इन लेखों में विविधता होती है। इनके लिए जगह निर्धारित करते वक्त विषय के महत्व और पाठक की सुविधाओं का ध्यान रखा जाता है। इनमें एक बड़ा लेख होता है जिसे मुख्य लेख भी कहते हैं। यह आमतौर पर तात्कालिक घटनाओं पर केन्द्रित और विश्लेषणपरक होता है। ऐसे लेखन हाल ही में हुई किसी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, अंतरराष्ट्रीय, वैज्ञानिक, पर्यावरण, शिक्षा या किसी अन्य क्षेत्र से जुड़ी घटना पर लिखे जाते हैं। इन्हें संपादकीय विभाग के लोग स्वयं लिखते हैं या बाहर के किसी संबंधित विषय के विशेषज्ञ से लिखवाते हैं। हालांकि डाक से भी रोज ऐसे लेख आते हैं, जिनमें से संपादकीय विभाग के लोग विषय के महत्व और अखबार की वैचारिक दिशा का ध्यान रखते हुए चुनाव करते हैं।

लेकिन यह जरूरी नहीं कि ये लेख सिर्फ अखबार या पत्रिका की नीति पक्ष में हों। कई बार किसी मुद्दे के विरोध में लिखे गए लेख भी प्रकाशित होते हैं और उसके पक्ष में भी। इससे उस विषय के दोनों पहलुओं का सम्यक विश्लेषण हो पाता है। उदाहरण के लिए, केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने स्कूली पाठ्यक्रम में बदलाव किया और उसे आसान बनाने के लिए कुछ फैसले किए। संभव है, कुछ शिक्षाविद् इस बदलाव के पक्ष में हों और कुछ विरोध में अगर कोई अखबार सिर्फ इसके पक्ष में लिखे लेख प्रकाशित करता है तो उसका एक ही पहलू सामने आएगा। मगर इसकी आलोचना में लिखे लेखों को प्रकाशित करने से दूसरा पहलू भी सामने आता है। ऐसे मामलों में संपादकीय टीम के लोगों से अपेक्षा की जाती है कि वे मुद्दों के अनुसार उनके पक्ष और विपक्ष दोनों पहलुओं को ध्यान में रखते हुए लेखों का चयन और प्रकाशन करें ताकि पाठक पूरे मुद्दे से परिचित हो सकें।

मुख्य लेख के अलावा कुछ लेख ऐसे भी होते हैं जिनका तात्कालिक महत्व भले न हो, पर वे लंबे समय से चले आ रहे किसी मसले या विवाद को उजागर करते हैं। इनमें

राजनीति, समाज, साहित्य, संस्कृति, स्वास्थ्य, पर्यावरण, शिक्षा, कानून–व्यवस्था अंतरराष्ट्रीय मामले या सरकार की किसी नीति से जुड़े अनेक मुद्दे हो सकते हैं। ये लेख मुख्य लेख से आकार में छोटे जरूर होते हैं, मगर इनकी भी प्रकृति उनके जैसी होती है। इनमें तथ्यों और तर्कों के आधार पर अपनी बात को पुष्ट किया जाता है। इन लेखों के चुनाव में थोड़ा लचीला रुख अपनाया जाता है। यह जरूरी नहीं कि इन्हें संबंधित क्षेत्र के जाने–माने विशेषज्ञ ही लिखें।

इसके अलावा एक छोटा लेख ऐसा भी दिया जाता है जिसकी प्रकृति गंभीर लेखों से भिन्न हो। कुछ अखबार व्यंग्यात्मक लेख प्रकाशित करते हैं, कुछ लोगों के अनुभव प्रकाशित करते हैं तो कुछ किसी समस्या को केन्द्र में रखकर लिखी गयी ललित शैली की रचनाएं प्रकाशित करते हैं। 'जनसत्ता' का 'दुनिया मेरे आगे', नवभारत टाइम्स का 'कांटे की बात', राष्ट्रीय सहारा का 'कटाक्ष', हिन्दुस्तान का 'नक्कारखाना' इसी तरह के कॉलम हैं। लेकिन इन टिप्पणियों में भी किसी न किसी घटना या समाचार को आधार बनाते हुए बात को आगे बढ़ाया जाता है। ऐसे लेखों के प्रकाशन के पीछे एक मकसद यह होता है कि सहज तरीके से व्यंग्य या कथात्मक शैली में मुद्दे को मार्मिक और प्रभावी ढंग से उजागर किया जा सके। ऐसे लेखों का पाठकों पर गहरा असर पड़ता है और वे रुचि के साथ इन्हें पढ़ते हैं। इससे लेखकों की भी एक अलग श्रेणी बनती है। जो लोग राजनीतिक, आर्थिक या अंतरराष्ट्रीय मसलों पर नियमित लेखन नहीं करते या सिर्फ साहित्यिक लेखन करते हैं, उनको भी इन लेखों के जरिए अखबार से जोड़े रखने में मदद मिलती है।

इन लेखों के अलावा कुछ अखबारों में धार्मिक–आध्यात्मिक टिप्पणियों या पौराणिक ग्रंथों से छोटे प्रसंगों के लिए भी स्थान निर्धारित होते हैं। नवभारत टाइम्स में 'एकदा', 'उलटबांसी' और 'अंतर्दृष्टि' तथा हिन्दुस्तान में 'एक छोटी सी कहानी' शीर्षक से प्रकाशित होने वाली टिप्पणियों को इसी श्रेणी में रखा जा सकता है। ऐसी टिप्पणियों और प्रसंगों को प्रकाशित करने के पीछे मकसद समाज के उन पाठकों को आकर्षित करने का होता है जिनकी रुचि ऐसे विषयों में होती है।

उदाहरण के लिए किन्हीं दो हिंदी अखबारों के संपादकीय पृष्ठों के लेखों का अध्ययन करें और उनका विश्लेषण करने के बाद उनकी प्रकृति संबंधी मुख्य बिन्दुओं की सूची तैयार करें।

3.3.3 नियमित स्तंभ

कुछ अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर अलग–अलग दिन अलग–अलग विशेषज्ञों के लेखों के लिए स्थान निर्धारित होते हैं। इन्हें स्तंभ कहते हैं। स्तंभ का अर्थ होता है निर्धारित अंतराल पर लिखी जाने वाली नियमित टिप्पणी। स्तंभ साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक आधार पर लिखे जाते हैं। इन्हें कोई न कोई नाम दिया जाता है और लेखक के नाम के साथ–साथ उसकी तस्वीर भी। स्तंभ लिखने वाले अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ होते हैं। जैसे राजनीति, अर्थ, व्यापार जगत, कानून, पर्यावरण, खेल आदि। कुछ स्तंभों में ऐसी बाध्यता नहीं होती कि लेखक सिर्फ अपने क्षेत्र विशेष की समस्याओं पर टिप्पणी करें। वे कई बार अपने क्षेत्र से अलग हट कर दूसरे क्षेत्रों से जुड़े मुद्दों पर भी टिप्पणी करते हैं। कई बार वे अपने अनुभव भी लिखते हैं। इसलिए स्तंभों की प्रकृति संपादकीय पृष्ठ पर छपने वाले गंभीर लेखों से थोड़ी अलग हो जाती है। उनमें रोचकता और भाषा का प्रवाह ज्यादा निखर कर आता है।

जिन अखबारों में एक से अधिक संपादकीय पृष्ठ होते हैं उनमें नियमित स्तंभ देने की गुंजाइश अधिक रहती है। जिनमें सिर्फ एक पृष्ठ होता है उनमें अमूमन रविवार के दिन स्तंभ दिए जाते हैं। एक सुविधा यह भी होती है कि ज्यादातर अखबारों में रविवार के दिन संपादकीय टिप्पणियां नहीं होतीं। इसलिए उस दिन पूरे पृष्ठ पर स्तंभों के लिए जगह मिल जाती है। कुछ अखबार रविवार के दिन संपादकीय पृष्ठ के सामने वाले पृष्ठ को भी स्तंभों के लिए रखते हैं। कुछ अखबारों में हर दिन कोई न कोई स्तंभ होता है तो कुछ में कुछ खास दिनों में। 'जनसत्ता' में सिर्फ रविवार के दिन स्तंभ छापे जाते हैं जिसमें संपादकीय पृष्ठ के सामने वाला पृष्ठ भी इसके लिए निर्धारित है, जबकि दैनिक 'भास्कर' में रोज किसी न किसी व्यक्ति का स्तंभ होता है। जिन अखबारों में सप्ताह के ज्यादातर दिनों में स्तंभ दिए जाते हैं उनमें ये मुख्य लेख की पूर्ति करते हैं। इसलिए उनमें स्तंभकारों से यह ध्यान रखने की अपेक्षा की जाती है कि वे तात्कालिक या ज्वलंत विषयों पर ही लिखें। जिन अखबारों में सप्ताह में एक दिन स्तंभों के लिए निर्धारित होता है उनके लेखकों के साथ ऐसी बाध्यता नहीं होती। नियमित स्तंभों का निर्धारण करते समय स्तंभकारों के चुनाव में यह सावधानी बरती जाती है कि वे अलग अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ हों। ऐसा न हो कि सभी राजनीति के जानकार हों या सभी संस्कृति, साहित्य, पर्यावरण, विज्ञान, अर्थ जगत या ऐसे ही किसी क्षेत्र विशेष के विशेषज्ञ हों। इससे स्तंभों की प्रकृति में एकरसता आती है जबकि पाठक अलग अलग क्षेत्रों की अधिक से अधिक जानकारी चाहता है। इसलिए स्तंभों में विविधता जरूरी है। यही बात स्तंभकारों पर भी लागू होती है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपने अलग–अलग स्तंभों में नए–नए विषयों पर लिखें। स्तंभ का यह अर्थ कतई नहीं होता कि विशेषज्ञ उसे धारावाहिक की तरह लिखें या किसी एक विषय पर महीनों लिखते रहें या कई खंडों तक अपनी बात को आगे बढ़ाते रहें। एक स्तंभ में एक मुद्दा पूरा हो जाए, इस बात का ध्यान रखना जरूरी होता है। साहित्यिक पत्रिकाओं के स्तंभकार ऐसी छूट जरूर ले सकते हैं, मगर अखबार चूंकि नित नूतन घटनाएं प्रकाशित करने का माध्यम है, सूचना माध्यम है इसलिए उसके पाठक चाहते हैं कि उन्हें हर बार नई चीज मिले, किसी नई समस्या और मुद्दे पर जानकारी मिले। इसलिए स्तंभकारों से हर बार नए मसले पर चर्चा की अपेक्षा की जाती है। उदाहरण के लिए किन्हीं दो अखबारों में एक ही स्तंभकार के अलग–अलग स्तंभों का अध्ययन करें।

बोध प्रश्न –2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) संपादकीय टिप्पणी का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) संपादकीय टिप्पणी की विशेषताएं बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) नियमित स्तंभ का क्या अर्थ होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

4) नियमित स्तंभ के निर्धारण में किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?

.....

.....

.....

.....

3.3.4 साक्षात्कार

साक्षात्कार के जरिए क्षेत्र विशेष के विशेषज्ञ या किसी जिम्मेदार पद का निर्वाह करने वाले किसी व्यक्ति से उस क्षेत्र से जुड़ी समस्याओं, विवादों या नीतियों के बारे में टिप्पणी लेने की कोशिश की जाती है। इसलिए साक्षात्कार आमतौर पर अखबारों के संवाददाता, संपादकीय टीम के लोग या विशेषज्ञ लेते हैं। साक्षात्कार लेने से पहले यह तय कर लिया जाता है कि किस मुद्दे में पाठकों की रुचि अधिक है या कौन–सा मसला ज्वलंत है। उसी के अनुरूप व्यक्तियों का चुनाव किया जाता है। जैसे, अगर केन्द्रीय संसाधन विकास मंत्रालय ने शिक्षा को लेकर कुछ महत्वपूर्ण फैसले किए हैं तो बेहतर होगा कि संबंधित मंत्री से बातचीत की जाए या वे उपलब्ध नहीं हैं तो केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष या राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के निदेशक से बातचीत की जाए। अगर उस फैसले को लेकर कोई विवाद चल रहा है तो किसी प्रतिष्ठित शिक्षाविद से भी इस पर बातचीत की जा सकती है।

साक्षात्कार में पूछे जाने वाले प्रश्न या बातचीत के दौरान उठाए जाने वाले मुद्दों पर भी पहले से विचार होना चाहिए ताकि उन्हीं बिन्दुओं पर केन्द्रित रहा जा सके जिन्हें आप उठाना चाहते हैं। कई बार साक्षात्कारकर्ता संबंधित व्यक्ति से बातचीत करते वक्त उसके व्यक्तिगत जीवन के बारे में ज्यादा विस्तार से सवाल पूछते चले जाते हैं और जिन बिंदुओं पर बातचीत होनी चाहिए वे छूट जाते हैं या उभर कर नहीं आ पाते। इससे दो बातों का संकेत मिलता है : एक तो यह कि साक्षात्कार लेने वाले ने पहले से विषय का खाका तैयार नहीं किया था कि वह किन मुद्दों पर बातचीत

करना चाहता है। दूसरा यह कि वह जिन बिन्दुओं को उठाना चाहता है उनके बारे में उसके पास समुचित अध्ययन या जानकारी नहीं है। इसलिए साक्षात्कार लेने से पहले यह अपेक्षा की जाती है कि साक्षात्कार लेने वाले संबंधित मसले के जिन बिन्दुओं को उठाना चाहते हैं उनके बारे में पहले से अध्ययन कर लें और पिछली घटनाओं की जानकारी हासिल कर लें।

मान लीजिए, आपको स्कूली शिक्षा में बदले हुए पाठ्यक्रम के बारे में मानव संसाधन विकास मंत्री से साक्षात्कार लेने जाना है और आप वहां जाकर उनसे व्यक्तिगत सवाल पूछने लगते हैं तो उससे अखबार या पत्रिका का कोई मकसद हल नहीं होगा। यदि आप उनसे बदले हुए पाठ्यक्रम के बारे में सवाल पूछने की बजाय शिक्षा की सामान्य स्थिति पर बातचीत करने लग जाते हैं और एकाध प्रश्न में बदले हुए पाठ्यक्रम को समेट देते हैं तो इससे भी आपका मकसद पूरा नहीं होगा। इससे पूरा साक्षात्कार बेजान और बेअसर साबित होगा। साक्षात्कार के लिए जरूरी है कि आप बदले हुए पाठ्यक्रम के बारे में गहराई से अध्ययन करें, उसके पक्ष–विपक्ष को देखें, पिछले पाठ्यक्रम से उसकी तुलना करें और नए पाठ्यक्रम के कमजोर या सराहनीय पक्षों के बारे में भी सवाल तैयार करें। बेहतर साक्षात्कार वही माना जाता है जिसके लिए पहले से तैयारी करके सवाल पूछे जाएं या बातचीत की जाए।

कई बार ऐसा भी होता है कि साक्षात्कार देने वाले व्यस्तता की वजह से या दूसरे कारणों से कहते हैं कि सवाल लिख कर भेज दें, वे उनका उत्तर लिख कर दे देंगे। ऐसे में यह और भी जरूरी हो जाता है कि आप मुख्य मुद्दों पर ही केंद्रित सवाल तैयार करें। कुछ मौकों पर ऐसा भी होता है कि तुरंत साक्षात्कार लेने की जरूरत होती है। ऐसे में न तो आपके लिए संबंधित व्यक्ति तक पहुंच पाना संभव होता है और न संबंधित व्यक्ति अपने कार्यक्रमों को रोक कर तुरंत आपके लिए समय निकाल सकता है। ऐसे में टेलीफोन के जरिए बातचीत कर ली जाती है। टेलीफोन पर बातचीत चूंकि संक्षेप में ही की जा सकती है इसलिए साक्षात्कार लेने या बातचीत करने वाले से ज्यादा चुस्ती और मुस्तैदी की उम्मीद होती है। उसे मुख्य विषय पर ही केंद्रित रहना होता है।

अखबारों या दूसरे समाचार माध्यमों में साक्षात्कार आमतौर पर तभी प्रकाशित–प्रसारित किए जाते हैं जब किसी मुद्दे पर चर्चा चल रही हो, कोई बड़ी घटना हो गई हो या किसी व्यक्ति से बातचीत के जरिए किसी ज्वलंत मुद्दे के बारीक पहलुओं पर जानकारी हासिल करनी हो। इसलिए ऐसे साक्षात्कार में इधर–उधर की बातों के लिए गुंजाइश नहीं रह जाती। साक्षात्कार में अक्सर ऐसी भी स्थितियां आती हैं जब संबंधित व्यक्ति किसी विवादास्पद मसले पर टालमटोल करता है या सीधे–सीधे जवाब नहीं देता। वह यह कहकर टालने की कोशिश करता है कि वह उस मुद्दे पर कोई बात नहीं करना चाहता या उसे घुमाकर दूसरी तरफ मोड़ने की कोशिश करता है। ऐसे में कुशल साक्षात्कारकर्ता की पहचान होती है कि वह किसी न किसी तरह, सवाल दर सवाल करके उससे संबंधित विषय पर जवाब हासिल करे या उसके इनकार करने के बाद भी सवालों के जरिए यह साबित कर दे कि उसके जवाब न देने के पीछे क्या वजहें हो सकती हैं या उसकी क्या मंशा है। कई बार जिन मुद्दों पर संबंधित व्यक्ति कोई जवाब नहीं दे रहा होता है मगर साक्षात्कार लेने वाले के सवालों से ही बातें समझ में आ जाती हैं कि उसकी टालमटोल के पीछे क्या छिपा है। टेलीविजन पर इस तरह के अनेक साक्षात्कार आपने देखे होंगे और अखबारों–पत्रिकाओं में पढ़े भी होंगे।

3.3.5 पुस्तक समीक्षा, प्रतिक्रियाएं आदि

आमतौर पर पुस्तकों की समीक्षाएं भी संपादकीय पृष्ठ का ही हिस्सा होती हैं। रविवार के दिन जब अधिक से अधिक स्तंभ प्रकाशित किए जाते हैं, पुस्तक समीक्षा के लिए भी स्थान निर्धारित होता है। जिन अखबारों–पत्रिकाओं में पृष्ठ संख्या अधिक होती है वे पूरा पन्ना पुस्तक समीक्षा के लिए रखते हैं। इससे विविध विषयों की नई पुस्तकों के बारे में पाठकों को जानकारी प्राप्त होती है। इससे उन्हें अपनी रुचि की पुस्तके खरीदने में भी मदद मिलती है।

समीक्षा के लिए पुस्तकों का चुनाव करते वक्त पत्र–पत्रिकाएं अपने पाठकों की रुचि का भी ध्यान रखती हैं। वे ऐसी पुस्तकों पर समीक्षाएं या उनके बारे में जानकारी देने से परहेज करते हैं जिनमें उसके पाठक समुदाय की कोई रुचि नहीं होती। यही वजह है कि कुछ अखबारों–पत्रिकाओं में सिर्फ गंभीर और साहित्यिक पुस्तकों की समीक्षाएं प्रकाशित की जाती हैं तो कुछ में इन पर ध्यान नहीं दिया जाता। उनमें हल्की और सामान्य रुचि की पुस्तकों पर अधिक बल रहता है। 'जनसत्ता' और 'नवभारत टाइम्स' की पुस्तक समीक्षाओं पर नजर डालें तो दोनों की प्रकृति में कोई मेल नहीं दिखाई देता। दूसरी ओर, साप्ताहिक समाचार पत्रिका होते हुए भी 'इंडिया टुडे' और 'आउटलुक' की पुस्तक समीक्षाएं 'जनसत्ता' से मेल खाती हैं।

पुस्तकों की समीक्षाएं लिखवाने के लिए लेखकों का चुनाव करते वक्त भी सावधानी बरतनी जरूरी होती है। यह ध्यान रखा जाता है कि संबंधित पुस्तक पर उन्हीं लोगों से टिप्पणी लिखवाई जाए जो उस क्षेत्र के जानकार हों। यदि किसी कविता संग्रह पर कहानी के विशेषज्ञ से समीक्षा लिखवाएंगे तो उसमें काव्य संवेदना की पकड़ न होने की आशंका बनी रहेगी। इसी तरह किसी आर्थिक विषय पर लिखी पुस्तक की समीक्षा कोई साहित्य या इतिहास का जानकार व्यक्ति लिखेगा तो यह आंशका हो सकती है कि उस पर ठीक से टिप्पणी न हो पाए।

संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाली प्रतिक्रियाएं हालांकि पाठकों की ही होती हैं, लेकिन उनमें कई पाठकीय पत्रों से अलग प्रकृति की भी होती हैं। नियमित छपने वाले स्तंभों या किसी ज्वलंत मुद्दे पर पाठकों की गंभीर प्रतिक्रियाओं के लिए, जिनसे किसी बहस को आगे बढ़ाने में मदद मिलती हो अलग से स्थान निकाला जाता है। कुछ अखबार इन्हें स्वतंत्र रूप से अलग शीर्ष (स्लग) के साथ प्रकाशित करते हैं तो कुछ अखबार खुद संबंधित विषय पर दो या अनेक लोगों से प्रतिक्रियाएं मंगाकर उनके पक्ष और विपक्ष दोनों पहलुओं पर बहस को आगे बढ़ाते हैं। 'जनसत्ता' में संपादकीय पृष्ठ पर रविवार के दिन प्रकाशित होने वाली टिप्पणियां आमतौर पर उसमें प्रकाशित स्तंभों को लेकर या किसी ज्वलंत समस्या पर व्यक्त की गई प्रतिक्रिया होती हैं, जबकि दैनिक 'हिन्दुस्तान' या 'नवभारत टाइम्स' अपनी ओर से किसी सामयिक मुद्दे का चुनाव करके उस पर संबंधित विषय के विशेषज्ञों की राय प्रकाशित करते हैं। प्रायः इन मुद्दों का दायरा राजनीति से लेकर रहन–सहन तक फैला होता है। इन प्रतिक्रियाओं को प्रकाशित करने का मकसद किसी विषय पर सम्यक दृष्टि का प्रकाशन होता है।

3.3.6 समाचार विश्लेषण

समाचार विश्लेषण में भी मुख्य रूप से विचार व्यक्त किए जाते हैं। समाचारों से इनकी प्रकृति इस मायने में भिन्न होती है कि इसमें विशेषज्ञ समाचारों की तह तक जाते हैं

और उनके विविध पक्षों पर विस्तार से तर्कों के साथ विश्लेषण करते हैं। चूंकि अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर लेखों और टिप्पणियों के जरिए इस तरह के विचार व्यक्त किए जाते हैं इसलिए समाचार विश्लेषण के मामले में कई बार वे सुस्त पड़ जाते हैं, मगर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया यानी टेलीविजन और रेडियो पर संपादकीय के लिए जगह नहीं होती इसलिए वहां समाचार विश्लेषण को लेकर विशेष सावधानी बरती जाती है। वे विशेषज्ञों के पैनल के साथ अक्सर बातचीत के जरिए समाचारों की तह तक जाने और उनके विविध पक्षों पर प्रतिक्रियाएं जानने की कोशिश करते हैं। रेडियो से प्रसारित होने वाली वार्ताओं का भी यही मकसद है। अखबारों में यह दूसरे रूप में होता है। कई बार वरिष्ठ संवाददाता ही महत्वपूर्ण खबरों का विश्लेषण करते हैं या संपादकीय पृष्ठ के लेखक या संपादकीय टीम के लोग यह काम करते हैं।

मान लीजिए कि अमेरिकी राष्ट्रपति की भारत यात्रा प्रस्तावित है। उनके आने के कई दिन पहले से अखबारों और दूसरे समाचार माध्यमों में इसे लेकर खबरें आ रही हैं। ऐसे में समाचारों का विश्लेषण जरूरी हो जाता है क्योंकि पाठक या दर्शक सिर्फ इतनी सूचना नहीं प्राप्त करना चाहते कि अमेरिकी राष्ट्रपति भारत के दौरे पर आ रहे हैं या उनके आने के बाद किन–किन समझौतों पर हस्ताक्षर होंगे। वे यह भी जानना चाहते हैं कि उनकी यात्रा के निहितार्थ क्या हैं। वे जिस वक्त आ रहे हैं, दुनिया में राजनीतिक स्थिति क्या है और भारत के अपने पड़ोसी देशों के साथ रिश्ते कैसे हैं। ऐसे में उनके आने से क्या–क्या दूरगामी परिणाम निकल सकते हैं। अगर अमेरिका भारत के साथ व्यापारिक या सुरक्षा संबंधी मामलों में कोई समझौता करने का इच्छुक है तो इसकी क्या वजहें हो सकती हैं। इस यात्रा से भारत को क्या लाभ हो सकता है या अमेरिका क्या हासिल कर सकता है या भारत का उन्हें अपने यहां बुलाने के पीछे मकसद क्या है। इससे दोनों देशों के बीच रिश्ते मजबूत होंगे या सिर्फ कूटनीतिक लाभ के लिए अमेरिका इसमें दिलचस्पी ले रहा है। इन तमाम पहलुओं पर समाचार विश्लेषण में विचार किया जाता है।

3.3.7 पाठकों के पत्र

पाठकों के पत्र भी संपादकीय पृष्ठ के अहम हिस्सा होते हैं। इनसे न सिर्फ संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाली टिप्पणियों–लेखों के बारे में प्रतिक्रिया पता चलती है, बल्कि कई मुद्दों पर उनके विचारों को भी स्थान मिलता है। कई बार ऐसा देखा जाता है कि संपादकीय पृष्ठ पर छपने वाली टिप्पणियों या लेखों में जो बातें रह गई हैं या छोड़ दी गई हैं, पाठक उनकी तरफ ध्यान दिलाते हैं। इससे पाठकों और आम लोगों की भी अखबार के विचार पक्ष में शिरकत हो पाती है। कई बार किसी पाठक का पत्र भी संपादकीय टिप्पणी या लेख की तरह ही प्रभावशाली साबित होता है।

संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाली पत्रों की प्रकृति शिकायती या निजी समस्याओं वाले पत्रों से भिन्न होती है। इसमें व्यक्तिगत समस्याओं या किसी समस्या से संबंधित शिकायतें प्रकाशित नहीं होतीं। उन्हीं पत्रों को स्थान दिया जाता है जो अखबार या पत्रिका के विचार पक्ष से संबंधित हों। इन्हें छांटने में बहुत सावधानी की जरूरत होती है। कई बार पाठक किसी लेख की सिर्फ तारीफ या बेवजह निंदा करते हैं जिसमें उनका पूर्वाग्रह साफ झलकता है तो ऐसे पत्रों को भी शामिल नहीं किया जाता। वही पत्र शामिल किए जाते हैं जिनमें पाठक के निष्पक्ष विचार और उसकी बेबाक राय हो। पत्र सिर्फ संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले लेखों या टिप्पणियों पर हों, यह भी जरूरी नहीं होता। कई बार पाठक किसी समाचार पर सीधे प्रतिक्रिया

लिखते हैं, उन पर अपने विचार प्रकट करते हैं। ऐसे पत्र ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं।

पाठकों के पत्र के जरिए कई ऐसे लोगों को अखबारों में लिखने का मौका मिलता है जो लेख या दूसरे किसी स्तंभ के जरिए जगह नहीं पाते। इसलिए प्रशिक्षु पत्रकारों और लेखकों के लिए भी यह उपयुक्त स्थान होता है। कई पत्रकारों–लेखकों ने पत्र लेखन से ही अपने कैरियर की शुरुआत की है।

3.4 संपादकीय टीम की जिम्मेदारियां

संपादकीय पृष्ठ पर हालांकि ज्यादातर लेख और टिप्पणियां वरिष्ठ और अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ लोगों की प्रकाशित होती हैं, मगर उन्हें वैसा ही नहीं प्रकाशित कर दिया जाता, जैसा वे लिख कर भेजते हैं। उनके तथ्यों और भाषा को बारीकी से जांचा–परखा जाता है। कई बार ऐसा भी होता है कि लेखक किसी विषय पर अतिरेक में या पक्षपातपूर्ण तरीके से अपने विचार लिख कर भेज देते हैं। इनसे बचना होता है। ऐसे में सहायक संपादक या वरिष्ठ उप–संपादक उन लेखों और टिप्पणियों को सावधानी से पढ़ते और उनका संपादन करते हैं। अगर किसी आंकड़े पर उन्हें संदेह होता है तो उसकी जांच करते हैं। चूंकि हर अखबार और पत्रिका अपने पाठकों की रुचि का ध्यान रखते हुए रचनाओं का चयन करते हैं इसलिए संपादकीय टीम की यह जिम्मेदारी होती है कि लेखों की प्रकृति को उनके अनुरूप रखे।

संपादकीय टीम की यह भी जिम्मेदारी होती है कि वह घटनाओं पर लगातार निगाह रखे और उन पर ताजातरीन लेख लिखे या लिखवाएं। कई बार ऐसा भी होता है कि किसी महत्वपूर्ण घटना की खबर पहले से होती है। उस पर लेखकों से लिखवाने के लिए पहल करना या खुद लिखना भी संपादकीय दल की जिम्मेदारी होती है या कोई घटना जैसे ही घटे उस पर एक–दो दिन के भीतर लेख और टिप्पणी प्रकाशित करना भी उसकी जिम्मेदारी का हिस्सा है। ऐसा भी नहीं होना चाहिए कि किसी घटना को घटे पंद्रह दिन बीत चुकने के बाद उस पर टिप्पणी प्रकाशित हो। तब तक बाकी अखबार और पत्रिकाएं अपने विचार प्रकाशित कर चुके होते हैं इसलिए वह विषय बासी हो चुका होता है। विषय के प्रति सतर्क रहने से न सिर्फ लेखों के चयन में सुविधा होती है, बल्कि उनके संपादन में भी सहूलियत रहती है। कई बार ऐसे विषयों पर लेख आते हैं जिन पर लगातार कुछ न कुछ घटनाक्रम चल रहा होता है। ऐसे में ताजा घटनाक्रम से लेख को ताजा बनाना भी संपादकीय टीम का जिम्मा है।

लेखों का चयन करने के बाद उनका संपादन सावधानी की मांग करता है। एक भी तथ्य या शब्द ऐसा नहीं जाना चाहिए जिससे भ्रम पैदा होता हो या गलत संदेश जाता हो। कई सतर्क लेखकों से भी कई बार तथ्यात्मक भूलें हो जाती हैं। उन्हें ठीक करना चूंकि संपादकीय टीम की जिम्मेदारी होती है इसलिए उनसे अधिक सतर्क और विषय से संबंधित नयी से नयी जानकारी रखने की उम्मीद की जाती है। लेख लिखने वाले तो अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ और विद्वान होते हैं इसलिए वे तथ्यों को जुटाने के बाद लिखने बैठते हैं। लेकिन संपादकीय टीम के पास न तो इतना वक्त होता है कि हर विषय से संबंधित तथ्य जुटाएं या उसके स्रोतों पर नजर रख सकें और न इस बात की गुंजाइश होती है कि टीम में हर क्षेत्र के विशेषज्ञ लोगों को शामिल किया जाए। इसलिए संपादकीय टीम में काम करने वालों से यह उम्मीद की जाती है कि अध्ययन करके लगभग सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों से संबंधित सामान्य जानकारी हासिल करें ताकि लेखों का संपादन करते वक्त किसी तरह की चूक उनसे न रह जाए।

लेखों के अलावा पाठकों के पत्रों का संपादन भी टेढ़ा काम होता है। हर दिन दर्जनों पत्र आते हैं और उनमें से कई ऐसे होते हैं जो निजी आग्रहों से भरे होते हैं। उनमें कुछ काम की बातें भी हो सकती हैं। इसलिए सावधानी से पढ़ते हुए उनमें से मुद्दे पर आधारित तथ्यों को निकालना पड़ता है। पाठकों से यह उम्मीद भी नहीं की जाती कि वे बिल्कुल तथ्य पर आधारित या सटीक पत्र लिखें। इसलिए उनके तथ्यों और भाषा को सुधारने में ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है।

बोध प्रश्न –3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) समाचार विश्लेषण में किन बातों को प्रस्तुत करने की कोशिश की जाती है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पाठकों के पत्रों की प्रकृति के बारे में आप क्या जानते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) संपादकीय टीम की क्या जिम्मेदारियां हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 संपादकीय और फीचर पृष्ठ के लेखों की प्रकृति में अंतर

संपादकीय पृष्ठ के लेखों में चूंकि किसी ताजा खबर पर तथ्यात्मक और तार्किक विचार होते हैं इसलिए उनकी प्रकृति फीचर पृष्ठों के लेखों से भिन्न होती है। फीचर के लेखों में यह ध्यान रखने की जरूरत नहीं होती कि वे किसी ताजा घटना पर आधारित हों। वे सामान्य जीवन व्यवहार और समस्याओं पर केन्द्रित हो सकते हैं। इसलिए उनके विषय का दायरा अधिक होता है। जरूरी नहीं कि किसी घटना पर आधारित विषय पर ही फीचर लिखे जाएं। इसलिए उनकी प्रस्तुति में निबंधात्मक शैली

का प्रयोग किया जा सकता है। उसे ललित निबंधों की तरह प्रस्तुत किया जा सकता है जिसमें शेरो–शायरी से लेकर कथा–कहानी तक का हवाला दिया जा सकता है (इस बारे में आप दूसरे पाठों में विस्तार से पढ़ चुके हैं) मगर संपादकीय पृष्ठों में इस बात की छूट नहीं ली जा सकती।

इस पृष्ठ पर छपने वाले लेख चूंकि किसी न किसी घटना या सुर्खियों में रही समस्या को केन्द्र में रख कर लिखे जाते हैं इसलिए उनमें विषय से भटकने या शैली में प्रयोग की छूट नहीं ली जा सकती। इस पृष्ठ के लेख विषय–केन्द्रित होते हैं। उनमें विषय से संबंधित तथ्यों और घटनाओं का जिक्र किया जा सकता है। इनमें तर्को का ज्यादा महत्व होता है। चूंकि तर्कों और तथ्यों के जरिए निष्कर्ष तक पहुंचना होता है इसलिए इनमें भटकाव या शैलीगत प्रयोग लेख की धार को मार देते हैं। इन लेखों का मकसद लोगों में जागरूकता पैदा करने या उन्हें वास्तविक स्थिति से अवगत कराना जरूर होता है, लेकिन फीचर के लेखों की तरह यह मकसद सीधे प्रकट नहीं होता। ये फीचर की तरह लोगों में संवेदना जगाने के मकसद से नहीं, बल्कि घटनाओं या नितियों के निहितार्थों, उसके विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने के उद्देश्य से लिखे जाते हैं। इसलिए संपादकीय पृष्ठ के लेखों की प्रकृति प्रायः सीधी रेखा में चलने की तरह होती है।

उदाहरण के लिए, किसी भी अखबार के फीचर पृष्ठ का कोई लेख और संपादकीय पृष्ठ का एक लेख पढ़ें और खुद विश्लेषण करें कि दोनों की प्रकृति में क्या अंतर है। इनकी बिन्दुवार सूची भी तैयार करें।

3.6 संपादकीय पृष्ठ के लिए लेखन

हम ऊपर बात कर आए हैं कि संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले लेख और टिप्पणियों में विचार महत्वपूर्ण होते हैं, इसलिए इन्हें लिखना थोड़ा कठिन माना जाता है। जब तक आपमें किसी घटना के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित नहीं होगी और क्षेत्र विशेष या कई विषयों के प्रति तथ्यात्मक सजगता विकसित नहीं होगी, तब तक ऐसे लेख लिखने का कौशल आ पाना मुश्किल होगा। लेखों का आकार चूंकि बड़ा होता है इसलिए उनमें सिर्फ किसी एक पक्ष पर विचार प्रकट करने की बजाय समग्र रूप से विश्लेषण की उम्मीद की जाती है। किसी एक पक्ष पर विचार प्रकट करने से वह लेख नहीं, बल्कि पाठकीय पत्र बन कर रह जाएगा। इसलिए उनके लेखकों से उम्मीद की जाती है कि वे जिस भी घटना या समस्या का विश्लेषण करना चाहते हैं उसके पीछे की घटनाओं, उससे मिलती–जुलती देश–दुनिया की तमाम घटनाओं और फैसलों पर नजर डालते हुए उसके निहितार्थों और परिणामों पर भी रोशनी डालें।

उदाहरण के लिए, अगर आपको आदिवासी समाज के लिए सरकार के किसी फैसले पर लेख लिखना है तो इसकी प्रकृति फीचर की तरह नहीं होगी। तथ्य वही हो सकते हैं, मगर चूंकि संपादकीय पृष्ठ पर आपके विचारों का ज्यादा महत्व होता है इसलिए तथ्यों पर ज्यादा केन्द्रित करने की बजाय आपसे उम्मीद की जाती है कि विचारों पर ध्यान दें। मान लें कि सरकार जंगल की जमीन का सार्वजनिक उपक्रमों के लिए उपयोग करने की इजाजत देने संबंधी कोई नीति बनाती है जिससे आदिवासियों के लिए आवास और रोजगार के अवसर छिनने का भय है। इसके लिए सरकार उनकी पुनर्वास संबंधी योजनाओं की भी साथ में घोषणा कर देती है। ऐसे में इस पर लेख

लिखते समय आपको यह ध्यान देने की जरूरत है कि जंगलों के कटने से न सिर्फ पर्यावरण को खतरा पहुंचता है बल्कि किस तरह वन्य जीवों और आदिवासियों के रहन–सहन पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है। कटे हुए जंगलों से होने वाले पर्यावरणिक नुकसान की भरपाई के प्रयास सामाजिक वानिकी के तहत वृक्षारोपण के जरिए तो किए जाते हैं, मगर इनसे कितना लाभ मिल पाया है, और क्या सामाजिक वानिकी वन्यजीवों और आदिवासियों के लिए जंगल का पर्याय हो सकती है? आदिवासियों को किसी शहरी व्यवस्था के तहत बसाने से उनके जीवन पर क्या बुरा प्रभाव पड़ता है, इसका विश्लेषण होना चाहिए। इस तरह एक मुकम्मल विचार संपादकीय पृष्ठ के लेखों में व्यक्त किया जाता है।

संपादकीय पृष्ठ पर हालांकि कुछ हल्के–फुल्के लेख भी दिए जाते हैं, जैसा कि हम ऊपर 'जनसत्ता' में प्रकाशित होने वाले 'दुनिया मेरे आग', नवभारत टाइम्स में 'कांटे की बात' या राष्ट्रीय सहारा में 'कटाक्ष' का जिक्र किया है, मगर इन लेखों की प्रकृति पर आप नजर डालें तो वे किसी न किसी रूप में विचार प्रकट करते हैं। वे फीचर पृष्ठों के लेखों से भिन्न होते हैं। उनमें भी किसी न किसी समस्या पर व्यंग्य, कटाक्ष या तार्किक मंतव्य प्रकट किए जाते हैं। इसलिए संपादकीय पृष्ठ के लिए लेखन के विषय का चुनाव करते वक्त यह बात ध्यान रखने की है कि विषय किसी ताजा घटना, नीति या फैसले से जुड़ा हो। ऐसे विषय का चुनाव नहीं किया जाना चाहिए जिस पर अनावश्यक टिप्पणी देनी पड़े या जिसका जनहित से कोई सरोकार न हो।

संपादकीय पृष्ठ के लेखों में हालांकि विचार महत्वपूर्ण होते हैं, लेकिन इससे लेखक को यह छूट नहीं मिल जाती कि वह बहुत तीखा होकर या किसी से बहुत प्रभावित होकर उसका पक्ष लेते हुए विचार प्रकट करे। इन लेखों में तटस्थता, निष्पक्षता और तार्किकता बहुत जरूरी है। शब्दों का संभल कर प्रयोग करना होता है ताकि आपके विचार एकांगी या पूर्वग्रहस्त न लगें। भाषा ऐसी हो जो सबकी समझ में आ सके। गरिष्ठ भाषा विचारों के प्रभाव और पहुंच को रोकती है। इसलिए अखबारों–पत्रिकाओं में बोलचाल की भाषा पर ज्यादा जोर दिया जाता है। लिखते समय तथ्य जुटाने के लिए पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, इंटरनेट आदि का सहारा लिया जा सकता है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि तथ्यों के साथ–साथ उनके विचारों की भी चोरी करें। कई विषयों पर कई लोगों के विचार एक से हो सकते हैं, मगर उनकी प्रस्तुति हूबहू एक–सी हो, यह संभव नहीं है। इसलिए लेखक को इन बातों से भी बचने की जरूरत होती है।

बोध प्रश्न 4

निम्नलिखित प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर दें।

1) संपादकीय पृष्ठ के लेख फीचर से किस प्रकार भिन्न होते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) संपादकीय पृष्ठ के लिए विषय का चुनाव करते समय किन बातों का ध्यान रखना होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) संपादकीय पृष्ठ के लेखों का स्वरूप क्या होना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

3.7 सारांश

- संपादकीय पृष्ठ किसी भी अखबार का विचार पक्ष होता है।
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की अपेक्षा पत्र–पत्रिकाओं में विचार पक्ष की अधिक गुंजाइश होती है।
- संपादकीय पृष्ठ को मुख्य रूप से सात भागों में बांटा जा सकता है– संपादकीय टिप्पणी, लेख, नियमित स्तंभ, साक्षात्कार, पुस्तक समीक्षाएं, प्रतिक्रियाएं, समाचार विश्लेषण और पाठकों के पत्र।
- संपादकीय टिप्पणी में किसी घटना, नीति या फैसले पर संपादक के विचार होते हैं। इसे संपादकीय टीम के सहायक संपादक लिखते हैं। इन टिप्पणियों में निष्पक्षता, तटस्थता और जनहित के प्रति पक्षधरता आवश्यक होती है।
- संपादकीय पृष्ठ के लेखों में किसी घटना, नीति या सरकार के फैसले का तार्किक और तथ्य–आधारित विश्लेषण होता है। हालांकि कुछ लेख हल्के–फुल्के विषयों पर भी होते हैं, मगर उनमें भी विचार ही मुख्य होते हैं।
- एक निश्चित अंतराल पर लिखे जाने वाले एक ही व्यक्ति के लेखों या टिप्पणियों को नियमित स्तंभ कहते हैं। स्तंभकार हर बार नई घटना या विषय पर अपने विचार प्रकट करता है। इन्हें धारावाहिक की तरह प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।
- साक्षात्कार किसी घटना या चर्चित विषय पर उस क्षेत्र के विशेषज्ञ या वरिष्ठ अधिकारी से बातचीत को कहते हैं। इसमें पूछे जाने वाले सवालों का सटीक और मुद्दे पर आधारित होना जरूरी होता है।
- पुस्तक समीक्षाएं आमतौर पर नई पुस्तकों के बारे में जानकारी देने के मकसद से प्रकाशित की जाती हैं। यह ध्यान रखा जाता है कि टिप्पणियां संबंधित विषय के

जानकार लोगों से लिखवाई जाएं।

- किसी स्तंभ को लेकर या किसी ज्वलंत विषय पर पाठकों की प्रतिक्रियाएं संबंधित मुद्दे पर सम्यक जानकारी देने के मकसद से प्रकाशित की जाती हैं।
- समाचार विश्लेषण में किसी ताजा घटना के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर प्रकाश डाला जाता है। उसके निहितार्थों और संभावित नतीजों की पड़ताल की जाती है।
- पाठकों के पत्रों में उनके निजी विचार होते हैं। मगर संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले पत्रों में उनकी निजी समस्याओं या शिकायतों को शामिल नहीं किया जाता।
- संपादकीय पृष्ठ के लेख चूंकि ताजा समाचारों पर आधारित विषय पर केन्द्रित होते हैं और उनमें विचार ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं इसलिए वे फीचर पर लेखों से भिन्न होते हैं।
- संपादकीय टीम से अपेक्षा की जाती है कि वह घटनाओं के प्रति अधिक सतर्क रहे और उन पर लेख लिखे या लिखवाए। उनका संपादन करते वक्त रुचि और पत्र की नीतियों का ध्यान रखे। तथ्यों के प्रति सजग रहें।
- संपादकीय पृष्ठ के लिए लिखते वक्त विषय पर ध्यान केन्द्रित रहना चाहिए। एक सीधी रेखा में चलने की तरह विषय को आगे बढ़ाना चाहिए। अत्यधिक प्रभाव या भावनाओं में बहकर नहीं लिखा जाना चाहिए।

अभ्यास

पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें :

1) संपादकीय पृष्ठ का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) संपादकीय पृष्ठ पर मुख्य रूप से क्या प्रकाशित किया जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) संपादकीय टिप्पणी का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

.....

.....

4) संपादकीय पृष्ठ के लेखों की प्रकृति फीचर पृष्ठ के लेखों से किस प्रकार भिन्न होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

5) संपादकीय टीम की क्या जिम्मेदारियां हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

6) संपादकीय पृष्ठ के लिए लेखन में किस तरह की सावधानियां बरतनी जरूरी हैं?

.....

.....

.....

.....

7) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए

- नियमित स्तंभ

  .....

  .....

  .....

- साक्षात्कार

  .....

  .....

- समाचार विश्लेषण

.....

.....

.....

- पाठकों के पत्र

.....

.....

.....

- पुस्तक समीक्षा

.....

.....

.....

3.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) इसलिए कि बाकी पृष्ठों पर मुख्य रूप से समाचार प्रकाशित होते हैं। संपादकीय पृष्ठ विचार का पृष्ठ होता है, जिससे नीतियों, घटनाओं या फैसलों पर विशेषज्ञों की राय का पता चलता है। लोगों में जागरूकता पैदा होती है और सरकार को अपने फैसलों या समस्याओं पर विचार करने को मजबूर होना पड़ता है।

2) संपादकीय पृष्ठ पर छपने वाली टिप्पणियां संपादक के विचार होती हैं। लेखों में उसकी सहमति होती है। समाचार के पृष्ठों की तरह इस पर महज सूचनाएं नहीं दी जातीं, तर्क के साथ पक्ष या विपक्ष में विचार प्रकट किए जाते हैं।

3) अग्रलेख चूंकि संपादक के विचार होते हैं इसलिए उनसे अखबार की भी दिशा का पता चलता है। छोटे आकार में यह किसी भी महत्वपूर्ण घटना के बारे में विश्लेषणपरक वैचारिक लेख होता है। न सिर्फ सामान्य पाठक को, बल्कि सरकार और प्रशासन के महत्वपूर्ण पदों का निर्वाह कर रहे लोगों को भी ये टिप्पणियां प्रभावित करती हैं।

4) विशेष संपादकीय किसी विशेष अवसर पर लिखे जाते हैं। सरकार बदलने, गंभीर आपदा के समय कानून–व्यवस्था की कमजोरियां उजागर होने, किसी बड़ी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक घटना या सरकार के किसी बड़े फैसले के वक्त आमतौर पर ऐसी टिप्पणियां लिखी जाती हैं।

बोध प्रश्न 2

1) संपादकीय टिप्पणी से न सिर्फ पाठकों के किसी घटना या सरकार के फैसले के बारे में विचार हासिल होते हैं, बल्कि सरकार और प्रशासन में जिम्मेदार पदों का निर्वाह करने वालों को भी दिशा मिलती है। साथ ही अखबार के दूसरे पृष्ठों पर काम करने वाले लोगों को भी अखबार का रुख जानने और भाषा संबंधी

सावधानियां बरतने में मदद मिलती है।

2) संपादकीय टिप्पणी तर्कपूर्ण, तथ्य–आधारित और विषय पर केन्द्रित होती है। इसमें भाषा संबंधी शालीनता का विशेष ध्यान रखा जाता है। वह निष्पक्ष और जनहित का ध्यान रखते हुए लिखी जाती है इसलिए उसमें कई बार सरकार या प्रशासन को सुझाव के तौर पर कुछ बिंदुओं की तरफ इशारा भी किया जाता है।

3) नियमित स्तंभ का अर्थ है निर्धारित अंतराल पर लिखा जाने वाला लेख याटिप्पणी।

4) स्तंभों के निर्धारण में इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है कि ये ऐसे विशेषज्ञों से लिखवाए जाएं जो उससे सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण पक्षों को अपने आलेख में समाहित कर लें।

बोध प्रश्न 3

1) समाचार संपादन में किसी ताजा घटना के बारीक पहलुओं का विश्लेषण किया जाता है। उसके निहितार्थों पर विचार किया जाता है।

2) पाठकों के पत्र भी अखबार–पत्रिका के विचार पक्ष का अहम हिस्सा होते हैं। संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले पत्रों में व्यक्तिगत समस्याओं या शिकायतों को जगह नहीं दी जाती। वे किसी लेख, टिप्पणी या समाचार पर पाठक के निजी विचार होते हैं।

3) संपादकीय टीम का काम घटनाओं के प्रति सजग रहते हुए उन पर लेख और टिप्पणियां लिखवाना या लिखना, पाठकों और पत्र की नीतियों के अनुरूप तथ्यों और भाषा का ध्यान रखते हुए उनका संपादन करना है।

बोध प्रश्न 4

1) संपादकीय पृष्ठ के लेख चूंकि विचार–आधारित और ताजा घटनाक्रम पर केन्द्रित होते हैं इसलिए उनमें फीचर लेखों की तरह शैलीगत प्रयोग और संवेदनाएं जगाने के मकसद से लिखने की छूट नहीं होती।

2) संपादकीय पृष्ठ के लिए विषय का चयन करते वक्त इस बात का ध्यान रखना जरूरी होता है कि वे ताजा घटनाक्रम से जुड़े हों, जिन पर विचार प्रकट करनाजरूरी हो और वे जनहित में हों।

3) संपादकीय पृष्ठ के लेख निष्पक्ष, तर्कपूर्ण और किसी निष्कर्ष पर पहुंचने वाले होते हैं।

- अभ्यास के लिए दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिखिए।